International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 0.899
Vol.2 No.1 Sept - Oct 2014

'रजा के 'आधा गाँव' उपन्यास में सांप्रदायिक परिदृष्य'

डॉ. युवराज माने
असिस्टंट प्रोफेसर
आबासाहेब मराठे आर्टस,न्यू कॉमर्स, सायन्स कॉलेज,
(विखारे – गोठने) राजापुर, महाराष्ट्र

सारांष :

राही मासूम रजा का प्रतिभाषाली व्यक्तित्व था। उन्होंने हिंदी, उर्दू में साहित्य लिखा है। 'आधा गाँव' हिंदी का उनका पहला उपन्यास है। जो पहले उर्दू में 'मुहब्बत के सिवा' नाम से लिखा गया था। 'आधा गाँव' उपन्यास का प्रकाषन सन 1966ई. में हुआ है। उपन्यास के आरंभ में ही विभाजन की काली छाया दिखाई देती है। विभाजन की आँधी गंगौली गाँव को ही सारे हिंदुस्तान को निगल जाती है। विभाजन के सांप्रदायिक दंगों में हिंदुस्तान के कई बेटे अपने माँ–बाप से बिछड जाते है। इन दंगों में हिंदू–मुस्लिम दोनों मारे गए। बहू–बेटियों की इज्जत लुटी गई। लोगों के घर उजड गए। यह अकेली गंगौली की कहानी न होकर हिंदुस्तान के हजारों गाँवों की कहानी बन गई। विभाजन के समय जो सांप्रदायिकता के बीज भारतीय समाज में बोये गए हैं। वह आज भी है। सांप्रदयिकता का मूल असल में धर्म में है। आजतक आम जनता को कौम के नाम पर रोटी सेंकनेवालों ने कटपुतलियों की तरह नचाया है और लोग नाचते आए हैं। समाज की सांप्रदायिकता को खत्म करने के लिए हमें पहले अपने ह्दय की सांप्रदायिकता को खत्म करना होगा। विभाजन के बाद गंगौली अलग रंग में रंग गयी। समय किसी के लिए नही ठहरता क्योंकि समय न धार्मिक होता है न राजनीतिक और यह समय की कहानी है। बडे से बडे जख्म के लिए समय से बेहतरीन दवा हो ही नहीं सकती। विभाजन के जख्म कभी भी भरे नहीं जा सकते लेकिन उसपर मरहम लगाने का काम समय ने किया है। इसी का एहसास गंगौली को हुआ है और वह अपना जीवन व्यतित कर रही है। राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' उपन्यास सांप्रदायिकता, आँचलिकता और स्वानुभूति को दर्षाता है।

भूमिका :

राही मासूम रजा एक प्रतिभाषाली व्यक्तित्व थे। राही का जन्म संपन्न एवं सुषिक्षित षिया परिवार में हुआ। पिता बषीर हसन अब्दी गाजीपुर में एक कामयाब वकिल थे। उन्हें तीन भाई और चार बहने थी। रजाजी ने अलिगढ विष्वविद्यालय से पीएच.डी. की थी। राही ने जीवनकाल में उर्दू और हिंदी में विपुल साहित्य का सृजन किया। हिंदी में उन्होंने नौं उपन्यास लिखे हैं। 'आधा गाँव' हिंदी का उनका पहला उपन्यास है। उर्दू में 'मुहब्बत के सिवा' अजनबी षहर आदि उपन्यास है। 'अठारह सौ सत्तावन'

हिंदी उर्दू महाकाव्य है। 'मैं एक फेरीवाला', 'नया साल', 'मौजे गुल','रस्मेमय' हिंदी के काव्य है। अलिगढ से मुंबई आनेपर उन्होंने फिल्मों के संवाद गीत और कथानक लिखने का काम किया उन्होंने करीब–करीब तीन सौ फिल्मों में संवाद कथा और गीत लिखें।

'रजा के 'आधा गाँव' उपन्यास में सांप्रदायिक परिदृष्य' :

राही मासूम रजा उर्दू से हिंदी में आए। उर्दू उपन्यास 'मुहब्बत के सिवा' उन्होंने 'आधा गाँव' नाम से हिंदी में प्रकाषित किया। 'आधा गाँव' उपन्यास का प्रकाषन सन् 1966 ई. में हुआ है। इस उपन्यास में रजा ने गंगौली गाँव के षिया मुसलमानों की जीवन गाथा प्रस्तुत की है। यह कहानी गंगौली गाँव या गंगौली गाँव के लोगों की न होकर गंगौली में गुजरनेवाले समय की कहानी है।

राही के अनुसार ''यह कहानी न कुछ लोंगो की है और न कुछ परिवारों की। ××××××× यह कहानी है समय ही की। यह गंगौली में गुजरनेवाले समय की कहानी है। कई बुढे मर गए, कई जवान बूढे हो गये,कई बच्चे जवान हो गए और कई बच्चे पैदा हो गये। यह उम्रों के इस हेर–फेर में फँसे हुए सपनों और हौसलों की कहानी है। यह कहानी है उन खडँहरों की जहाँ कभी मकान थे और यह कहानी है उन मकानों की जो खँडहरों पर बनाये गये हैं। (राही मासूम रजा,2004ई.)

उपन्यास के आरंभ में ही विभाजन की काली छाया मंडराने जाने का संकेत मिलता है। जो उपन्यास को आगे बढाता है। यह विभाजन की आँधी समूचे देष को निगल जाती है, जिससे गंगौली गाँव भी नहीं बच सका। 'आधा गाँव' उपन्यास में सांप्रदायिकता केवल धार्मिक न होकर सामाजिक और राजनीतिक भी है। जो अपने आप में उपन्यास को आगे बढाती है।

सामाजिक सांप्रदायिकता :

गंगौली जैसे छोटे से गाँव में भी हमें सामाजिक सांप्रदायिकता दिखाई देती है। गाँव षिया और सुन्नियों में, सय्यदों और जुलाहों में, उत्तर और दक्खिनी पट्टी में बटा है। गंगौली में प्रमुखता से मुसलिम धर्म के लोग रहते हैं। धर्म एक होने के बावजूद भी उत्तरी पट्टी और दक्खिनी पट्टी में गंगौली बटा है। ये एक दूसरे को हमेषा नीचा दिखाने की ताक में रहते हैं। बरखपुर में हुए कत्ल के इल्जाम में कोमिला चमार जो बेगुनाह है वह गिरफ्तार होता है। कोमिला की माँ बबुरमवा बो (बाबूराम की धर्मपत्नी) हकीम साहब के पास जाती है। हकीम साहब कासिमबाद के थानेदार को एक सौ एक रूपया देते है और कोमिला के खिलाफ मुकदमा कमजोर बनाने को कहते हैं। जिससे वह आसानी से छूट जाये। हकीम साहब कोमिला के माँ को समझा–बुझाकर घर भेजते हैं। उसी वक्त दरवाजे पर गुलाम हुसैन खाँ मिलते हैं। वे उस दुखी माँ को सामनेवाले इमाम चौक पर मन्नत माँगने को कहते हैं। यह बात धीरे–धीरे गाँव में फैल जाती है। उत्तर पट्टी के इमाम चौक पर मन्नत माँगने से गुलाम हुसैन खाँ की बीवी के बदन से साँप का जहर खुद–ब–खुद उतर गया था। खाँ साहब की मुराद पूरी हो गयी

थी। यह बात आस–पास में फैल गयी। जिससे दक्खिन पट्टीवालों का माथा ठनका। उन्हें डर था की बबुरमवा–बो की मन्नत से कोमिला कहीं छुट ना जाय। ''अगर कोमिला छुट गया तो बडे ताजिये की बडी किरकिरी होगी और दक्खिनी–पट्टी की नाक कट जाएगी।'' (राही मासूम रजा,2004ई.)

कोमिला न छुटे और बो की मन्नत पूरी न हों इसलिए दक्खिन – पट्टीवाले कासिमाबाद के थानेदार को तीन सौ रूपये देते हैं। जिससे कोमिला को फाँसी तो न हो लेकिन सजा जरूर हो जाए। इस बात का फायदा सुखरमवा उठाता है। जो एक धनी परिवार से है और उसकी कोमिला के पिता बाबूराम से दुष्मनी है। उसका एक बेटा कलेक्टर के यहा माली है तो दूसरा काँग्रेसी। सुखरमवा कोमिला को फाँसी हो इसलिए अपना घर, बहू के गहने गिरवी रखकर रूपये ठाकूर के पास जमा करता है। बलीराम ठाकूर सुखरमवा से वादा करते है कि कोमिला को फाँसी होगी। मुकदमा चलता है और कोमिला को फाँसी की सजा का हुक्म सुनायी दिया जाता है। ''दक्खिन–पट्टीवालो ने फैसला सुनकर इत्मीनान की साँस ली और एक और चमाईन ने बबुरमवा– बो से कहा की उसे बडे ताजिये पर मन्नत माननी चाहिए थी कि उसी ताजिये ने पंडिताइन के लडके को बचाया था। कोमिला की सजा ने बडे ताजिये की धाक और जमा दी। (राही मासूम रजा,2004ई.)

यहा हम पाते हैं की अपनी पट्टी की धाक जमाने और आपसी दुष्मनी में एक बेगुनाह की जान जाती है। यह केवल सांप्रदयिकता के कारण होता है।

राजनीतिक सांप्रदायिकता :

जीना साहब के निर्देषन में 'पाकिस्तान' इस नए मुल्क की उत्पत्ती हो रही थी। जो पहले कागज पर थी, फिर जमीन पर लकीर के रूप में खिंची गयी और अब लोगों के हृदय में उमड आयी है। यह विभाजन की आँधी समूचे देष को निगल गई। जिससे हिंदू अधिक हिंदू बने और मुसलमान अधिक मुसलमान बन गए। इस आँधी को हवा देने का काम राजनेताओं ने या उनके षार्गिदों ने किया है। उपन्यास में हम देखते है कि पाकिस्तान के निर्माण के लिए अलिगढ से आये हुए लडके और काली षेरवानी वाली स्त्री पाकिस्तान को वोट देने के लिए गंगौली के मुसलिम लोगों को हिंदूओं के विरूद्ध भडका रहे है। वे कहते है –''हिंदूओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता।'' (राही मासूम रजा,2004ई.) क्योंकि ये जो हिंदू है वे हम पर जुल्म कर रहे हैं। मौलवी बेदार ने कहा –''सुन रहें कि ई हरामजादे हिंदू मुसलमानों के घरों में घुस–घुस के कतल कर रहें। '' (राही मासूम रजा,2004ई.) लेकिन यह बातें तो गंगौली में घटीत नहीं हो रही थी। गंगौली के लोगों को अलग पाकिस्तान की आवष्यकता क्यों है यह बताते हुए अलिगढ से आये हुए लडके बिरादारसे कहते है – '' हम ऐसे मुल्क में रहते है जिसमें हमारी हैसियत दाल में नमक से जादा नहीं है। एक बार अंग्रेजों का साया हटा तो ये हिंदू हमे खा जाएंगे। इसलिए हिंदुस्तानी मुसलमानों को एक जगह की जरूरत है जहाँ वह इज्जत से जी सके।'' (राही मासूम रजा,2004ई.)

राजनेताओं ने विभाजन को मजहबी फर्ज बताकर आम जनता के हृदय में पाकिस्तान बसाने का प्रयास किया, लेकिन क्या असल में आम जनता को पाकिस्तान की आवष्यकता है ? गंगौली के लोग अपने मन से पाकिस्तान नहीं जाना चाहते। कौम के नामपर दूसरे ही लोग उन्हें हिंदुस्तान से निकलवा रहे थे। मिगदाद कहता है – '' ना जाएवाले हैं कहीं! जायें ऊ लोग जिन्हें हल–बैल से षरम आती है। हम तो किसान हैं, ×××××× जहाँ हमारा खेत, हमारी जमीन– तहाँ हम।'' (राही मासूम रजा,2004ई.) यहाँ के लोग अपनी जमीन,घर को ही कायनात मानते हैं। उन्हें दूसरी कायनात की आवष्यकता नहीं है।

धार्मिक सांप्रदायिकता :

सांप्रदायिकता का मूल असल में धर्म में है। दो धर्मों को लडाने का काम पहले अंग्रजों ने किया अब राजनेता और धार्मिक नेता कर रहे हैं। 'आधा गाँव' उपन्यास में हम ऐसा ही कुछ पाते है। स्वामीजी जो हिंदू धर्म प्रसारक और रक्षक है वे भगवत गीता की कथा बताते हुए कहते है – ''तब भगवान कृष्ण ने कहा, हे अर्जुन! हूँ तो मैं हूँ और मेरे सिवाय कोई और नहीं है। आज वह मुरलीमनोहर भारत के हिंदू को पुकार रहा है कि उठो और गंगा और यमुना के पवित्र तट से इन मलेच्छ मुसलमानों को हटा दो।'' (राही मासूम रजा,2004ई.) जिस भगवत गीता में मानवता को ही धर्म माना है। उसी के आधार पर यह स्वामी जनता के मन में सांप्रदायिकता के बीज बो रहा था। वह विभाजन को धर्म संकट मानते हुए कहता है – ''गंगाजली उठाकर प्रतिज्ञा करो कि भारत की पवित्र भूमि को मुसलमानों के खून से धोना है। ××××××× देखो कलकत्ता और लाहोर और नवाखाली में इन मलेच्छ तुर्कों ने हमारी माताओं का कैसा अपमान किया है। (राही मासूम रजा,2004ई.) स्वामी की तरह पंडीत मातादी भी कहते है कि – मलिच्छ मुसलमानों को भारतवरष से निकाल देवे को चाहिए ××××××× कलकत्ता अउर लाहौर का किस्सा सुनाईन की एक–एक हिंदू औरत पर दस–दस मुसलमान उतर गए।'' (राही मासूम रजा,2004ई.) जिस प्रकार पंडीत मातादीन बताते है कि हिंदूओं पर मुसलमानों ने जुल्म किया उसी प्रकार मौलवी बेदार भी मुसलमानों से कहते है कि – ''सुन रहें कि ई हरामजादे हिंदू मुसलमान के घरों में घुस–घुस के कतल कर रहे है।'' (राही मासूम रजा,2004ई.)

हम पाते है कि जिस लोगों को मानवता धर्म की षिक्षा देनी चाहिए वही लोग (पंडीत, मौलवी) धर्म, कौम के नामपर समाज में सांप्रदायिकता फैला रहे हैं। जिन्हें सांप्रदायिकता की आग बुझानी चाहिए थी वही उसी में घी डाल रहें हैं।

विभाजन का (गंगौली के) समाज पर परिणाम :

हिंदुस्तान का विभाजन हो गया। दुनिया के नक्षे पर 'पाकिस्तान' नाम का नया मुल्क आया। राजनेताओं ने, धार्मिक नेताओं ने अपना – अपना काम कर दिया। पर क्या इस विभाजन के आग की लौव उन नेताओं को लगी थी ? क्या उनका परिवार इस आग में जल गया था ? नहीं ना ? करते है

बडे नेता और भुगतना पडता है आम जनता को। इसी तरह की गंगौली गाँव की स्थिति हो गयी थी। जो गंगौली गाँव हसीन बाग की बहार की तरह था, उसमें अब केवल– अन – केवल मायुसी छा गयी थी। परिवार बिखरा था। विभाजन ने माँ –बाप से बेटे, बहनों से भाई, पत्नियों से पति ही नहीं अलग किए बल्कि इन्सान को इन्सान से अलग किया। इन्सान को जमिन से अलग किया। तन्नू,सद्दन, मिग्गे,दिलषाद अपने वतन से दूर हो गए। जवान बेटे पाकिस्तान में तो बुढे माँ–बाप हिंदुस्तान (गंगौली) में रह गयी थे। गंगौली में हाँसी–मजाक में पल्लू ओढ लिया था। ''तमाम लोग रो रहें थे क्योंकि इन तमाम लोगों के गले में पाकिस्तान की कटी हुई नाल फाँसी तरह पडी हुई थी और तमाम लोगों के दम घुटे जा रहे थे। ×××××××× हकिम साहब के लिए आलमें –तनहाई के मानी यह थे कि इकलौता बेटा पाकिस्तान में था और वह अपनी बहू और पोतों–पोतियों के साथ हिंन्दुस्तान में थे।'' (राही मासूम रजा,2004ई.)

अब मुहर्रम की वह भीड, भागदौड, जज्बा खत्म हो गया था। उसकी जगह तनहाई ने ली थी। हिंन्दुस्तान को आजादी मिली लेकिन ''आजादी के साथ कई तरह की तनहाईयाँ भी आयी। बिस्तर की तनहाई से लेकर दिलों की तनहाई तक। उत्तर और दक्खिन–पट्टी में हर फर्ज यकलख्त अकेला हो गया। बुढापा,जवानी और बचपन, सुहाग और बेवगी, दोस्ती, दुष्मनी और पट्टीदारी! हर कैफियत अकेली थी। हर जज्बा तनहा था। दिन से रात और रात से दिन का ताल्लुक तुट गया था।'' (राही मासूम रजा,2004ई.)

आजादी के बाद जमीनदारों की जमीनदारियाँ खत्म हो गयी। जिससे जमीनदारों के दरवाजे पर भीड–भडक्के का जो बडा पेड था वहा दिन–ब–दिन सूख गया। जो लोग जमीनदार थे उन्हें जूतों की दूकान खोलनी पडी। ग्राहक के पैरों को हाल लगाने पडते थे। जो लोग जमीनदारों की सेवा करते थे जमीनदारी खत्म होने से उन्हें (जमीनदारों को) उनकी सेवा करनी पड रही थी। फुस्सु मिया ने जूतों का दूकान खोला है। ''पहले तो उन्हें ग्राहकों से बात करते षर्म आती थी। ग्राहक भी कैसे, जिनकी पुष्तें उन्हें और उनके बुजुर्गों को सलाम करने में गुजरी थी। वही गाँव के जुलाहें और राकी, वही चमार और अहीर। ××××××× रफ्ता – रफ्ता खरीद के दाम पर कसमें खा–खाकर माल बेचने का फन आ गया और दूकान चल निकली।'' (राही मासूम रजा,2004ई.)

विभाजन के बाद गंगौली अलग रंग में रंग गयी। समय किसी के लिए नही ठहरता क्योंकि समय न धार्मिक होता है न राजनीतिक और यह समय की कहानी है। बडे से बडे जख्म के लिए समय से बेहतरीन दवा हो ही नहीं सकती। विभाजन के जख्म कभी भी भरे नहीं जा सकते लेकिन उसपर मरहम लगाने का काम समय ने किया है। इसी का एहसास गंगौली को हुआ है और वह अपना जीवन व्यतित कर रही है।

निष्कर्ष :

राही मासूम रजा ने 'आधा गाँव' उपन्यास में विभाजन के वक्त हुई सांप्रदायिकता को दर्षाया है। यह सांप्रदायिकता सामाजिक,राजनीतिक और धार्मिक है। गंगौली ग्राम की कहानी केवल गंगौली की न होकर गंगौली जैसे हजारों भारतीय गाँवों की कहानी बन गई है। विभाजन के समय जो सांप्रदायिकता के बीज भारतीय समाज में बोये गए हैं। वह आज भी है। सांप्रदयिकता का मूल असल में धर्म में है। आजतक आम जनता को कौम के नाम पर रोटी सेंकनेवालों ने कटपुतलियों की तरह नचाया है और लोग नाचते आए हैं। समाज की सांप्रदायिकता को खत्म करने के लिए हमें पहले अपने ह्दय की सांप्रदायिकता को खत्म करना होगा। राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' उपन्यास सांप्रदायिकता, आँचलिकता और स्वानुभूति को दर्षाता है।

संदर्भ संकेत :

1. राही मासूम रजा, आधा गाँव, राजकमल प्रकाषन,नई दिल्ली,चौथी आवृत्ति –2004 ई., पृ.11, 74, 75, 241, 264, 240, 216, 273, 274, 263–64, 291, 291, 325